SWAARNIM FOUNDATION

स्वर्णिम

Whatsapp पर मासिक पत्रिका प्राप्त करने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें ।

वर्ष 01 - अंक 03 | डिजीटल मासिक पत्रिका - अगस्त 2023 | कुल पृष्ठ - 24

गोअमृत पियो स्वस्थ्य रहो

गोमूत्र है महाऔषधि

बिमारियों को जड़ से मिटाएं, तन्दरुस्ती और खूबसूरती बढ़ाए

महामण्डलेश्वर आचार्य प.पू. अवधेशानंदजी से गोमूत्र पर चर्चा

गोमूत्र पंचगव्यों में से एक है। मानव औषधि के रूप में शोधकर्ता एवं खोजकर्ता इंदौर के वीरेन्द्रकुमार जैन ने अनेकों रोगों को ठीक करने में इसको स्थापित कर दिया है। ब्रिटेन के डॉ. काफोड हैमिल्टन के अनुसार – गौमूत्र के उपयोग से हृदय रोग दूर होता है तथा पेशाब खुलकर होता हैकुछ दिन तक गौमूत्र सेवन से धमनियों में रक्त का दबाव स्वाभाविक होने लगता हैं, गौमूत्र सेवन से भूख बढती है, यह पुराने चर्म रोग की उत्तम औषधि है। ब्रिटेन के अन्य चिकित्सक डॉक्टर सिमर्स कहते हैं कि गौमूत्र रक्त में बहने वाले दूषित कीटाणुओं का नाश करता है। आयुर्वेद के अनुसार, गोमूत्र कुष्ठ रोग, बुखार, पेप्टिक अल्सर, यकृत रोग, किडनी विकार, अस्थमा, कुछ एलर्जी , सोरायसिस, एनीमिया और यहां तक कि कैंसर का इलाज कर सकता है। आधुनिक शोध के अनुसार भी वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि

स्वर्णिम मासिक पत्रिका स्वताधिकारी स्वर्णिम फ़ाउंडेशन इंदौर के लिए प्रकाशक/ मुद्रक/ प्रबंध संपादक रेखा जैन द्वारा सुगन ग्राफ़िक्स ट्रेड सेंटर साउथ तुकोगंज से मुद्रित करवाकर स्वर्णिम फ़ाउंडेशन से प्रकाशित। प्रधान संपादक वीरेन्द्रकुमार जैन। संपादक मंडल – विवेक जैन,कपिल जैन,शारदा जैन,पूजा जैन,विशाल जोशी

पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन गोअमृत सेवन करते हुए

गोमूत्र मे कैंसर रोधी गुण होते हैं। यह कैंसर के खतरे को रोकने का काम करता है।

गोमूत्र पान एक ऐसी प्रथा है जिसका पारम्परिक रूप से कुछ संस्कृतियों में, विशेषकर भारत में, सदियों से पालन किया जाता रहा है। बौद्ध संघ मे गोमूत्र का सेवन करना श्रामणेतरों के लिए अनिवार्य नियम था गौतम बुद्ध द्वारा भिक्षुओं को पाण्डु रोग से ग्रसित होने पर औषधि के रूप में गोमूत्र पीने का वर्णन विनय पिटक के महावग्ग में आता है। बौद्ध ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि श्रमण गोमूत्र में शोधित की गई हर्र सदैव अपने पास रखते थे। वायुविकार या पाचन संबंधी किसी भी प्रकार के कष्ट में वे इसे जल के साथ निगल जाते थे। हर्र एक ऐसी औषधि थी जो पूर्व काल से ही प्रचलित थी और रक्त शोधक , पाचक तथा रोगप्रतिरोधक की तरह उपयोग में लायी जाती थी । गोमूत्र की भावना देकर शोधन करने से हर्र में शरीर के सभी मुख्य तंत्रों की प्रणाली को सम करने गुण आ जाते थे। आयुर्वेद में पांडुरोग चिकित्सा एवं गलशुण्डी या टांसिलाइटिस मे गोमुत्र उपयोगी है। गोमूत्र सेवन के समर्थकों का दावा है कि इसके औषधीय और स्वास्थ्य लाभ हैं।

जैंस काऊ यूरिन थेरेपी हेल्थ क्लिनिक एवं अनुसन्धान केंद्र द्वारा लाखों मरीजों पर पिछले 24 वर्षों में किये गए शोध एवं मेडिकल रिव्यु से यह स्थापित हो चूका है की पंचगव्य चिकित्सा पद्धति से कैंसर, अस्थमा, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, चर्मरोग, किडनी रोग, लिवर

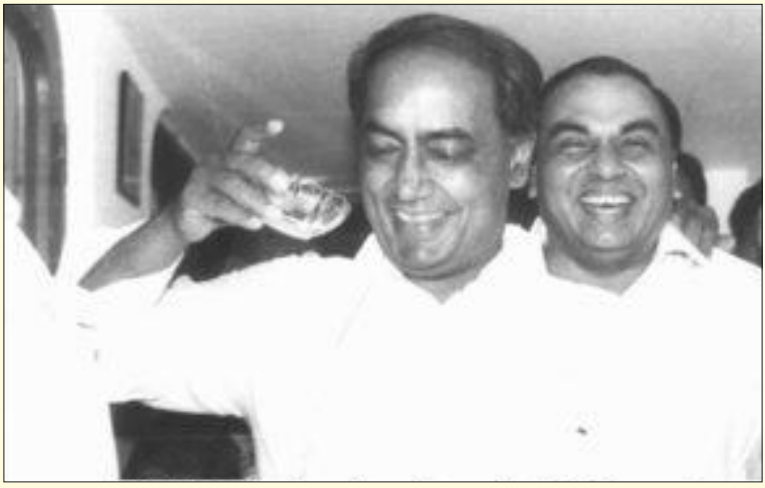

तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री दिग्विजयसिंह गो अमृत सेवन करते हुए, समीप हैं श्री वीरेन्द्र जैन

रोग, पेट के रोग ,स्त्री रोग सहित अनेकों रोगों में सफलता प्राप्त हुई है। इसलिए website : cowurine.com पर प्रतिदिन 6–7 हजार लोग विजिट करते है और संतुष्ट होकर फॉर्म भरकर क्लिनिक पर दिनभर सैकड़ों मरीज टेलीफोन (07313599100) पर डॉक्टर्स से परामर्श कर ट्रीटमेंट लेते है। ट्रीटमेंट से हुए लाभों की जानकारी अपने परिचितों को देकर उन्हें भी लाभान्वित करते है। गोमूत्र स्वस्थ्य देशी गाय का ही उपयोग किया जाना चाहिए। और इस बात को ध्यान में रखते हुए दवाइयों के निर्माता और भारत सरकार के पेटेंट विभाग से पेटेंट प्राप्त स्वर्णिम नेचर साइंस लिमिटेड द्वारा स्वस्थ्य एवं देशी गायों (गिर) के ही गोमूत्र का उपयोग दवाइयों के निर्माण में किया जाता है।

गोमूत्र के फायदे –

देसी गाय के गौमूत्र में कई उपयोगी तत्त्व पाए गए हैं, इसीलिए गौमूत्र के कई सारे फायदे हैं। देसी गाय के गौमूत्र में जो मुख्य तत्व हैं उनमें से कुछ का विवरण जानिए –

1. यूरिया (Urea): यूरिया मूत्र में पाया जाने वाला प्रधान तत्व है और प्रोटीन रस–प्रक्रिया का अंतिम उत्पाद है। यह शक्तिशाली प्रति जीवाणुकर्मक है।

2. यूरिक एसिड (Uric acid) : यह यूरिया जैसा ही है और इस में शक्तिशाली प्रति जीवाणुगुण हैं। इस के अतिरिक्त यह कैंसर कर्ता तत्वों का नियंत्रण करने में मदद करते हैं।

गौ मूत्र से हुआ मैं स्तन कैंसर ठीक – सांसद साध्वी प्रज्ञा

3. खनिज (Minerals) : खाद्य पदार्थों से व्युत्पद धातु की तुलना मूत्र से धातु बड़ी सरलता से पुनः अवशोषित किए जा सकते हैं।

4. यूरोकाइनेज (Urokinase) : यह जमे हुए रक्त को घोल देता है, हृदय विकार में सहायक है और रक्त संचालन में सुधार करता है।

5. एपिथिल्यम विकास तत्व (epithelium growth factor) : क्षति ग्रस्त कोशिकाओं और ऊतक में यह सुधार लाता है और उन्हें पुनर्जीवित करता है।

6. समूह प्रेरित तत्व (Colony stimulating factor) : यह कोशिकाओं के विभाजन और उनके गुणन में प्रभावकारी होता है।

7. हार्मोन विकास (Growth hormone) : यह विप्रभाव भिन्न जैवकृत्य जैसे प्रोटीन उत्पादन में बढ़ावा, उपास्थि विकास, वसा का घटक होना इत्यादि पर काम करता है।

8. एरीथ्रोपोटिन (Erythropoietin) : रक्ताणुकोशिकाओं के उत्पादन में बढ़ावा करता है।

9. गोनाडोट्रोपिन (Gonadotropins) : मासिक धर्म के चक्र को सामान्य करने में बढ़ावा और शुक्राणु उत्पादन।

10. काल्लीक्रिन (Kallikrein) : काल्लीक्रिन को निकलना, बाह्य नसों में फैलाव रक्तचाप में कमी।

11. ट्रिप्सिन निरोधक (Trypsin inhibitor) : माँसपेशियों के

राज्य सभा में ऑस्कर फर्नांडिस ने बताया – गो मूत्र से ठीक हुआ कैंसर

अर्बुद की रोकथाम और उसे स्वस्थ करना।

12. अलानटोइन (Allantoin) : घाव और अर्बुद को स्वस्थ करना।

13. कर्क रोग विरोधी तत्व (Anti cancer substance) : नि ओप्लासटन विरोधी, एच –11 आयोडोल – एसेटिक अम्ल, डीरेकटि न, 3 मेथोक्सी इत्यादि कि मोथेरेपीक औषधियों से अलग होते हैं जो सभी प्रकार के कोशिकाओं को हानि और नष्ट करते हैं। यह कर्क रोग के कोशिकाआ ंके गुणन को प्रभावकारी रूप से रोकता है और उन्हें सामान्य बना देता है ।

14. नाइट्रोजन (Nitrogen) : यह मूत्रवर्धक होता है और गुर्दे को स्वाभाविक रूप से उत्तेजित करता है।

15. सल्फर (Sulphur) : यह आंत कि गति को बढ़ाता है और रक्त को शुद्ध करता है।

16. अमोनिया (Ammonia) : यह शरीर की कोशिकाओं और रक्त को सुस्वस्थ रखता है।

17. तांबा (Copper) : यह अत्यधिक वसा को जमने में रोकधाम करता है।

18. लोहा (Iron) : यह RBC संख्या को बरकरार रखता है और ताकत को स्थिर करता है।

19. फोस्फेट (Phosphate)रू इसका लिथोट्रिपटिक कृत्य होता है।

20. सोडियम (Sodium) रू यह रक्त को शुद्ध करता है और

अत्यधिक अम्ल के बनने में रोकथाम करता है।

21. पोटैशियम (Potassium) : यह भूख बढ़ाता है और मांसपेशियों में खिझाव को दूर करता है।

22. मैंगनीज (Manganese) : यह जीवाणु विरोधी होता है और गैस और गैंगरीन में राहत देता है।

23. कार्बोलिक अम्ल (Carbolic acid) : यह जीवाणुविरोधी होता है।

24. कैल्शियम (Calcium) : यह रक्त को शुद्ध करता है और हड्डियों को पोषण देता है यह रक्त के जमाव में सहायक।

25. नमक (Salts) : यह जीवाणुविरोधी हैं और कोमा केटोएसीडोसिस की रोकथाम करते हैं।

26. विटामिन्स : विटामि न ए, बी1 ,बी 2 ,बी 3 ,बी 5 , बी 6 ,बी 7 ,बी 9 ,बी 12 , सी, डी और ई जो अत्यधिक प्यास की रोकथाम करते हैं और ताकत प्रदान करतेहैं।

27. लेक्टोस शुगर (Lactose sugar) : ह्रदय को मजबूत करता है, अत्यधिक प्यास और चक्कर की रोकथाम करता है।

28. एंजाइम्स (Enzymes) : प्रति रक्षा में सुधार, पाचक रसों के स्रावन में बढ़ावा।

29. पानी (Water) : शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है और रक्त के द्रव को बरकरार रखता है।

30. हिप्पुरिक अम्ल (Hippuric acid) : यह मूत्र के द्वारा दूषित पदार्थों का निष्काषन करता है।

31. क्रीयटीनिन (Creatinine) : यह जीवाणुविरोधी है।

32. स्वमाक्षर (Swamakshar) : जीवाणुवि रोधी, प्रति रक्षा में सुधार, विषहर के जैसा कृत्य करता है।

जूनागढ़ विश्वविद्यालय ने शोध कर गोमूत्र में से 488 तत्व निकले है जिसमे 8.50 mg/ltr सोना भी है और 4.57 mg/ltr चांदी भी है। इसलिए ये कई बिमारियों में कारगर ही नहीं है बल्कि मनुष्य को स्वस्थ्य रखने में अहम्भूमि का है। इसलिए नवजात शिशु से लेकर वृद्ध सभी इसका सेवन कर सकते है |

www-cowurine.com पर मेडि केटिड गोअमृत सिरप ऑनलाइन भी उपलब्ध है जो पीने में मीठा भी है और शुगर फ्री है।

टोनर नेजल ड्राप

नस्य के लाभों की खोज : एक आयुर्वेदिक नाक चिकित्सा

प्रतिदिन नाक एवं नाभि में डालिये 2-2 बूँद टोनर नेजल ड्राप

नस्य कर्म आयुर्वेद में वर्णित पांच प्रमुख विषहरण उपचारों में से एक है, जिसे सामूहिक रूप से पंचकर्म के रूप में जाना जाता है। इस अभ्यास में नासि का मार्ग के माध्यम से औषधीय पंचगव्य शामिल है। आयुर्वेद नाक को मस्तिष्क और चेतना का द्वार मानता है, और नस्य टोनर नेजल ड्राप का उद्देश्य इन चैनलों को साफ और शुद्ध करना है, जिससे विभिन्न स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं।

आयुर्वेद में नस्य

संस्कृत में 'नासा' का अर्थ है 'नाक' और 'आयम' का अर्थ है 'काम करना'। इस प्रकार, नस्य नाक मार्ग के माध्यम से लागू की जाने वाली कोई भी चिकित्सा है। यह मुख्य रूप से सिर के चैनलों को साफ और शुद्ध करनेके लिए डिजाइन किया गया है, इस प्रकार गर्दन के ऊपर स्थित संवेदी और मोटर अंगों के इष्टतम कामकाज को बढ़ावा देता है। इस आयुर्वेदिक थेरेपी को शारीरिक स्वास्थ्य से लेकर मानसिक और भावनात्मक कल्याण तक व्यापक लाभ के लिए

जाना जाता है।

नस्य के लाभ

नस्य टोनर नेजल ड्राप नाक साफ करने की प्रक्रिया से कहीं अधिक है। स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर इसके संभावित प्रभाव को देखते हुए, यह कई लाभ प्रदान करता है :

1. श्वसन स्वास्थ्य में सुधार : नस्य टोनर नेजल ड्राप के नियमित अभ्यास से नासिका मार्ग और साइनस को साफ करने में मदद मिलती है, जिससे श्वसन पथ के समग्र स्वास्थ्य में सुधार होता है।

यह कंजेशन, एलर्जी, साइनसाइटिस और अन्य श्वसन संबंधी विकारों से राहत दिलाने में सहायता करता है। पुरानी खांसी और सर्दी से संबंधित समस्याओं को ठीक करता है, नाक खोलता है, और लगातार छींक आना कम करता है। विभिन्न प्रकार की एलर्जी जैसे अस्थमा, ब्रोंकाइटिस आदि में राहत देता है

2. मस्तिष्क के लिए नस्य टोनर नेजल ड्राप के फायदे : चूंकि नाक को मस्तिष्क तक पहुंचने का मार्ग माना जाता है, इसलिए माना जाता है कि नस्य मस्तिष्क की कोशिकाओं को उत्तेजित करता है और संज्ञानात्मक कार्यों को बढ़ाता है। माना जाता है कि नस्य स्मृति, एकाग्रता और बौद्धिक क्षमता सहित संज्ञानात्मक कार्यों को बढ़ाता है। उपचार नासिका मार्ग को साफ करके मस्तिष्क को उत्तेजित करता है, जिससे ऑक्सीजन की आपूर्ति में सुधार होता है, जो तंत्रिका कनेक्टिविटी और समग्र मस्तिष्क कार्य को बढ़ाता है।

3. संवेदी अंग के कार्य को बढ़ावा देता है : नस्य टोनर नेजल ड्राप संवेदी अंगों के समुचित कार्य के लिए फायदेमंद है। यह दृष्टि समस्याओं, सुनने की दुर्बलता को रोकने में मदद करता है और बालों को जल्दी सफेद होने या झड़ने से रोक सकता है।

4. सिरदर्द और माइग्रेन को कम करता है : नस्य टोनर नेजल ड्राप माइग्रेन सहित विभिन्न प्रकार के सिरदर्द से राहत दिला सकता है। यह अवरुद्ध चैनलों को साफ करके सिरदर्द की गंभीरता और आवृत्ति को कम करता है। बहुत अच्छी नींद देता है और खर्राटों को ठीक करता है।

5. तनाव और अनिद्रा से राहत देता है : नस्य टोनर नेजल ड्राप चिकित्सा में उपयोग किए जाने वाले औषधीय पंचगव्य दिमाग पर सुखदायक प्रभाव डालते हैं, तनाव को कम करते हैं और अच्छी नींद लाते हैं।

6. मौखिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है : नस्य टोनर नेजल ड्राप मसूड़े की सूजन और पायरिया जैसी बीमारियों को रोककर मौखिक स्वास्थ्य में भी सुधार करता है।

7. त्वचा के लिए नस्य टोनर नेजल ड्राप के फायदे : नस्य चिकित्सा त्वचा के स्वास्थ्य पर अपने अद्भुत प्रभावों के लिए भी जानी जाती है। जब औषधीय पंचगव्य नासिका मार्ग के माध्यम से लगाए जाते हैं, तो वे त्वचा के गहरे ऊतकों तक पहुंचते हैं, उन्हें पोषण देते हैं और पुनर्जीवित करते हैं। यह थेरेपी त्वचा की समस्याओं का कारण बनने वाले विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालकर शरीर को डिटॉक्स भी करती है। नस्य, त्रिदोषों को संतुलित करके, शरीर के चयापचय में सुधार करता है, जिससे त्वचा की प्राकृतिक चमक बढ़ती है। यह त्वचा में रक्त परिसंचरण को बढ़ाता है, बेहतर पोषण प्रदान करता है और एक स्वस्थ रंगत को बढ़ावा देता है। नस्य के नियमित अभ्यास से मुँह से, रंजकता और सूखापन जैसी त्वचा संबंधी समस्याओं को कम करने में मदद मिल सकती है, जिससे त्वचा स्वस्थ और अधिक चमकदार हो सकती है।

8. बालों के लिए नस्य टोनर नेजल ड्राप के फायदे : बालों का स्वास्थ्य एक अन्य क्षेत्र है जहां नस्य चिकित्सा पर्याप्त प्रभाव डाल सकती है। नस्य में उपयोग किए जाने वाले औषधीय पंचगव्य शरीर के माध्यम सेयात्रा करते समय खोपड़ी और बालों के रोम को पोषण देते हैं, जिससे बालों के विकास और मजबूती को बढ़ावा मिलता है। खोपड़ी के स्वास्थ्य में सुधार करके, नस्य रूसी, खोपड़ी की सूजन और बालों के झड़ने जैसी सामान्य समस्याओं को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है। शरीर के दोषों को संतुलित करके, यह सीबम उत्पादन को नियंत्रित करता है, जिससे खोपड़ी का इष्टतम स्वास्थ्य बना रहता है। नस्य से बढ़ा हुआ

रक्त परिसंचरण भी बालों के विकास को बढ़ावा देता है, यह सुनिश्चित करके कि पोषक तत्व खोपड़ी तक प्रभावी ढंग से पहुंचाए जाते हैं।

9. आंखों के लिए नस्य टोनर नेजल ड्राप के फायदे : नस्य के अभ्यास से आंखों के स्वास्थ्य के लिए भी काफी लाभ हो सकते हैं। आयुर्वेद में नासिका मार्ग का सीधा संबंध हमारी आंखों से होता है। नस्य के दौरान जब औषधीय पंचगव्य टोनर नेसल ड्राप नाक के माध्यम से लगाए जाते हैं, तो वे आंखों तक पहुंचते हैं और पोषण प्रदान करते हैं। यह अभ्यास आंखों की विभिन्न स्थितियों जैसे सूखी आंखें, आंखों पर तनाव और यहां तक कि मोतियाबिंद जैसी उम्र से सबंधिंत समस्याओं को प्रबंधित करने और रोकने में मदद कर सकता है।

10. बच्चों की मानसिक प्रग्रति : चेतना और पाचन तंत्र में उपयोगी और बच्चों की मानसिक प्रगति के लिए बहुत अच्छा है याददाश्त बढ़ाता है शक्ति देता है और मानसिक तनाव को दूर करता है और आपको तरोताजा बनाता है।

11. माइग्रेन साइनस में उपयोगी : माइग्रेन, साइनस दर्द और सिरदर्द में राहत देता है, तनाव, चिंता की भावना, मनोविकृति और झगड़ालूपन को ठीक करता है ।

12. बहरापन में फायदा : बहरापन और कान की झिल्ली संबंधी समस्या को ठीक करता है।

13. पक्षाघात, पार्किंसंस, कोमा में फायदा : पक्षाघात, पार्किंसंस, कोमा आदि जैसे रोगों में पूर्ण उपयोग करें।

14. पाचन विकारों में सहायक : यदि नेवल में डाला जाए तो यह कब्ज, गैस आदि जैसे पाचन विकारों में सहायक हो सकता है।

नोट :– यदि रोग लम्बे समय से है तो दिन में 3 बार प्रयोग कर सकते हैं।

सावधानियां

इस टोनर नेजल ड्राप का प्रयोग हमेशा गर्म पिघले रूप में ही करें। इसे गर्म करने के लिए इस बोतल को एक मिनट के लिए गर्म पानी में रखें। बोतल को सीधे आग में रखकर उसे न पिघलाएं।

टोनर नेजल ड्राप लगाते समय हमेशा सिर को थोड़ा पीछे करके सीधा लेटें। घृत को अपने आप मस्तिष्क में जाने दें, उसे जबरदस्ती अंदर न लें।

टोनर नेजल ड्राप डालने के बाद 15 मिनट तक उसी स्थिति में लेटे रहें, बोलें भी नहीं। एक ही स्थिति में सोना बेहतर है।

पंचगव्य टोनर नेजल ड्राप शरीर के सूक्ष्म भागों में भी सरलता से पहुँचकर शरीर का पोषण करता है। श्वसन तंत्र की सफाई करके श्वास–कास को दूर करता है। इसका नस्य लेने से यह मस्तिष्क के सूक्ष्म भागों में पहुँचकर वहाँ से कफ, कृमि, विष आदि को जलाकर नष्ट कर देता है। इसके नियमित सेवन से अपस्मार, उन्माद, ग्रहपीड़ा आदि मानसिक रोगों को दूर करता है। बालों के मूल को अंदर सें पोषण देकर उसे मजबूत बनाता है। यह कामला, पाण्डु, अर्श, गुल्म, भगंदर, चातुर्थिक ज्वर में भी अमृत के समान लाभ करता है।

रात को सोने से पहले नाभि में टोनर नेसल ड्राप लगाने से मिलते हैं ये 6 फायदे

टोनर नेजल ड्राप की कुछ बूंदे यदि नाभि में डाली जाएं और उसके आसपास हल्के हल्के हाथों से मालिश की जाए तो कई समस्याओं से राहत मिल सकती है।

1) जोड़ों का दर्द करे ठीक

जोड़ों के दर्द को ठीक करने में नाभि में लगाया गया टोनर नेजल ड्राप बेहद उपयोगी है। बता दें कि रात को सोने से पहले यदि टोनर नेजल ड्राप से नाभि के चारो तरफ हल्के हल्के हाथों से मालिश की जाए। टोनर नेजल ड्राप की कुछ बूंदे नाभि मे ंडाली जाएं तो

जोड़ों का दर्द दूर होने के साथ–साथ जोड़ों की सूजन और सुन्नपन से भी आराम मिल सकता है।

2) सर्दी –जुकाम जैसी समस्याओं से राहत

बदलते मौसम में अक्सर लोग सर्दी जुकाम आदि से परेशान रहते हैं। ऐसे में इस समस्या को दूर करने के लिए नाभि में टोनर नेजल ड्राप डालना बेहतर विकल्प है। रात को सोने से पहले टोनर की कुछ बूँद नाभि में डालें, साथ ही आसपास हल्के हल्के हाथों से टोनर की मालिश करें। ऐसा करने से सर्दी जुकाम के साथ–साथ सर्दी के कारण हो रहा है सिर के दर्द से भी छुटकारा मिल सकता है।

3) कब्ज की समस्या को दूर करें

कब्ज की समस्या को दूर करने में भी टोनर बेहद उपयोगी है। बता दें कि टोनर की कुछ बूंदे अगर रात को सोने से पहले नाभि पर डाली जाएं तो इससे ना केवल पाचन क्रिया में सुधार आता है बल्कि गैस की समस्या से भी राहत मिलती है। ऐसे में कब्ज की समस्या के लिए हम टोनर का इस्तेमाल कर सकते हैं।

4) मासिक धर्म में उपयोगी

पीरियड्स के दौरान अक्सर महिलाएं काफी दर्द और ऐंठन का सामना करती हैं। ऐसे में इस दर्द को दूर करने में टोनर बेहद उपयोगी है। रात को सोने से पहले यह महिलाएं अपनी नाभि में टोनर

को डालें। ऐसा करने से न केवल दर्द से राहत मिलती है उनकी ऐंठन की समस्या भी दूर हो जाती है।

5) आंखों के लिए उपयोगी

टोनर के उपयोग से आंखों की कई समस्याओं को दूर किया जा सकता है। ऐसे में रात को सोने से पहले तीन से चार बूँद टोनर की नाभि पर डालें और आसपास उसको अच्छे से फैलाएं। अब हल्के हल्के हाथों से नाभि के आस–पास मालिश करें। ऐसा करने से न केवल आंखों का सूखापन दूर होता है बल्कि कमजोर नजर आदि से भी छुटकारा मिल सकता है।

6) त्वचा के लिए अच्छा

रात को सोने से पहले अगर नाभि पर टोनर लगाया जाए तो ऐसा करने से त्वचा संबंधी सभी समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है। बता दें कि नेचुरल थेरेपी में इसके उपयोग से कई समस्याओं को ठीक किया जाता है।

यह चेहरे पर चमक बनाए रखने के लिए भी उपयोगी है। ऐसे में आप टोनर को गर्म करें और उसकी कुछ बूंदे उंगली के माध्यम से नाभि के चारो तरफ लगाएं। अब हल्के हल्के हाथों से मालिश करें। ऐसा करने से त्वचा की कई समस्याएं दूर होंगी।

पंचगव्य घी से बना टोनर नेजल ड्राप

टोनर नेजल ड्राप online खरीदने के लिए
https://store-cowurine-com/collections/oils

VU TRAVELS

Travel with our own chef
100% veg / jain food on most of our tours

South Africa

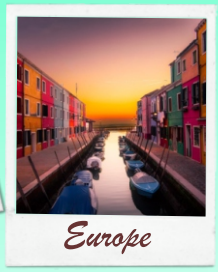
Europe

Dubai

Turkey

Bali

New Zealand

Singapore

Leh

Australia

Vietnam

Kashmir

Nilesh Mehta: +91 98400 45533 | +91 72007 45533

www.vutravels.com nmehta@vutravels.com @VUtoursandtravels

पंचगव्य खेती से ही मिल सकते है विष रहित अनाज, फल, फूल

जहर से बचिए और पंचगव्य खेती अपनाइये

पंचगव्य के उपयोग

पंचगव्य उपयोग से बंगले का गार्डन

पंचगव्य के उपयोग से होटल गार्डन

संपूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या है, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह–तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का

उपयोग, प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान के चक्र को (इकालाजी सिस्टम) प्रभावित करता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति खराब हो जाती है, साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकुल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान का चक्र Ecological

पब्लिक गार्डन, कालोनी गार्डन, नगर निगम/नगर पालिका गार्डन में उपयोगी पंचगव्य आदान

पंचगव्य खाद एवं फसल रक्षक से खेती

system निरन्तर चलता रहा था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। भारत वर्ष में प्राचीन काल से कृषि के साथ–साथ गौ पालन किया जाता था, जिसके प्रमाण हमारे ग्रंथों में प्रभुकृष्ण और बलराम हैं जिन्हें हम गोपाल एवं हलधर के नाम से संबोधित करते हैं अर्थात कृषि एवं गोपालन संयुक्त रूप से अत्याधिक लाभदायी था, जोकि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवेश में गोपालन धीरे–धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह–तरह की रसायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थो के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है, और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रसायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर, पंचगव्य खादों एवं दवाईयों का उपयोग कर, अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुध्द रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगे।

पंचगव्य खेती से लाभ

● कृषकों की दृष्टि से लाभ

भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृध्दि हो जाती है। सिचांई अतंराल में वृद्धि होती है। रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से कास्त लागत में कमी आती है। फसलों की उत्पादकता में वृध्दि।

● मिट्टी की दृष्टि से

जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है। भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती हैं। भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा।

● पर्यावरण की दृष्टि से

भूमि के जल स्तर में वृध्दि होती हैं। मिट्टी खाद पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण मे कमी आती है। कचरे

का उपयोग, खाद बनाने में, होने से बीमारियों में कमी आती है। फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृध्दि अंतरराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद की गुणवत्ता का खरा उतरना।

● उत्पादन अधिक या बराबर

जैविक खेती की विधि रासायनिक खेती की विधि की तुलना में बराबर या अधिक उत्पादन देती है

अर्थात जैविक खेती मृदा की उर्वरता एवं कृषकों की उत्पादकता बढ़ाने में पूर्णतः सहायक है।

पंचगव्य खेती हेतु प्रमुख जैविक खाद एवं दवाईयाँ :–

पंचगव्य खाद

- गोअमृत
- बायोडायनामिक खाद
- लिक्विड यूरिया पंचगव्य खाद
- बायो फर्टिलाइजर
- नाडेप
- बायोगैस स्लरी
- वर्मी कम्पोस्ट
- हरी खाद
- गोबर की खाद
- नाडेप फास्फो कम्पोस्ट
- पिट कम्पोस्ट (इंदौर विधि)
- भभूत अमतपानी

- अमृत संजीवनी
- मटका खाद

पंचगव्य फसल रक्षक

- नीमगो
- नीम– पत्ती का घोल/निबोली/खली
- मट्ठा
- मिर्च/लहसुन
- लकड़ी की राख
- नीम व करंज खली

पंचगव्य खाद एवं फसल रक्षक बनाने के लिए या विपणन करने के लिए पंचगव्य खेती सर्टिफि केट / डिप्लोमा करने हेतु निम्न वेबसाइट पर जाकर फॉर्म भरिये–

swaarnimfoundation.com

यदि आपको तैयार आदानों की आवश्यकता हो तो संपर्क करे– 07313599107

।। आयुर्वेदिक दोहे ।।

दही मथें माखन मिले, केसर संग मिलाय,
होठों पर लेपित करें, रंग गुलाबी आय ।
बहती यदि जो नाक हो, बहुत बुरा हो हाल,
यूकेलिप्टिस तेल लें, सूंघें डाल रूमाल ।
अजवाइन को पीसिये, गाढ़ा लेप लगाय,
चर्म रोग सब दूर हो, तन कंचन बन जाय ।
अजवाइन को पीस लें, नीबू संग मिलाय,
फोड़ा–फुंसी दूर हों, सभी बला टल जाय ।
अजवाइन–गुड़ खाइए, तभी बने कुछ काम,
पित्त रोग में लाभ हो, पायेंगे आराम ।
ठंड लगे जब आपको, सर्दी से बेहाल,
नीबू मधु के साथ में अदरक पियें उबाल ...
अदरक का रस लीजिए... मधु लेवें समभाग,
नियमित सेवन जब करें, सर्दी जाए भाग ।
रोटी मक्के की भली, खा लें यदि भरपूर,
बेहतर लीवर आपका, टी.बी. भी हो दूर
गाजर रस संग आँवला, बीस औ चालिस ग्राम,
रक्तचाप हिरदय सही, पायें सब आराम ।
शहद आंवला जूस हो, मिश्री सब दस ग्राम, बीस ग्राम घी साथ में, यौवन स्थिर काम ।।

यह सारे नुस्खे सैकड़ों वर्षों से आजमाए जा रहे हैं । आयुर्वेद पुस्तकों में इसके प्रमाण हमें प्राप्त होते हैं बिना दवाई खाएं कैसे स्वस्थ रहें इन दोहों में हमें नजर आएगा ।

।। स्वास्थ्य पर दोहे ।।

तुलसी का पत्ता, करे यदि हरदम उपयोग
मिट जाते है हर उम्र में, शरीर के सारे रोग ।
जो नहावें गर्म जल से, तन मन हो कमजोर
आँख ज्योति कमजोर हो, शक्ति घटे चहुँओर ।
हृदय रोग से आपको, बचना है श्रीमान
सुरा, चाय या कोल्ड्रिंग का मत करिए पान ।
लौकी का रस पीजिये, चोकर युक्त पिसान,
तुलसी, गुड़, सेंधा नमक, हृदय रोग निदान ।
रोज मुलहठी चूसिये, कफ बाहर आ जाएँ,
बने सुरीला कंढ भी सबको लगत सुहाए ।
भोजन करके खाइये, सौंफ, गुड़, अजवान,
पत्थर भी पच जाएगा, जानै सकल जहान ।
फल या मीठा खाइके, तुरंत न पीजै नीर,
ये सब छोटी आंत में, बनते विषधर तीर ।
एल्यूमिन के पात्र का, करता है जो उपयोग,
आमंत्रित करता सदा, वह अड़तालीस रोग
अलसी, तिल, नारियल, घी, सरसों का तेल,
इसका सेवन आप करें, नहीं होगा हार्ट फेल ।

दिव्यांग बच्चों को मुफ्त मेडिकल सुविधा देना महत्वपूर्ण : संभागायुक्त मालसिंह

1501 दिव्यांग बच्चों की निःशुल्क सर्जरी लक्ष्य पूर्ति हेतु कैंप

इन्दौर । 21 अगस्त । स्वर्णिम फाउंडेशन द्वारा 1501 दिव्यांग बच्चों की निःशुल्क सर्जरी का लक्ष्य पूर्ण करने हेतु 1 सितम्बर से इंदौर में 3 माह के लिए कैंप लगाया जा रहा है । इसके पोस्टर का विमोचन करते हुए संभागायुक्त माल सिंह भयडिया ने कहा यह एक महत्वपूर्ण और सामाजिक कार्य है, जिसका उद्देश्य है हमारे समाज में विकलांग बच्चों को मुफ्त मेडिकल सुविधाएँ प्रदान करना ।

इस हेतु उन्होंने आठों जिलों के कलेक्टर सहित सभी विभागों को कैंप में दिव्यांग बच्चों को भेजने हेतु आदेशित किया जावेगा।

विकलांगता केवल एक शारीरिक स्थिति नहीं है, बल्कि यह मानसिकता, भावनाओं और आत्मविश्वास की भी एक स्थिति है । हमारी जिम्मेदारी है कि हम इन बच्चों के प्रति सहानुभूति और समर्थन दिखाएं, ताकि वे भी समाज में समानवता का अधिकार उठा सकें।

इस सर्जरी शिविर के माध्यम से हम न केवल चिकित्सा सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं, बल्कि हम एक संदेश भी पहुँचा रहे हैं, समाज में सभी का साथ और समर्थन होना जरूरी है । मैं सभी से अनुरोध करता हूँ कि हम समाज सेवा के महत्वपूर्ण कार्य में अपनी भागीदारी दिखाएं और इन बच्चों के जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन लाने का संकल्प लें ।

प्रोजेक्ट प्रमुख वीरेन्द्र कुमार जैन ने बतलाया कि मालवा प्रांत के 15 वर्ष से कम उम्र के ऐसे दिव्यांग बच्चे जिनके हाथ पैर तेड़े मेड़ें हैं, मेंढ़क की तरह फुदक फुदक कर चलते हैं या चल नहीं पाते हैं उनकी आर्थोपैडिक नि:शुल्क सर्जरी कर उन्हें अपने पैरों पर खड़े कर स्वावलंबी बनाकर सम्मान से जीने के लिए यह बीड़ा उठाया गया है।

अध्यक्ष विवेक शारदा जैन ने बतलाया कि मरीज एवं उसके एक अभिभावक की हास्पिटल में खाने पीने की भी नि:शुल्क व्यवस्था की गई है ।

नि:शुल्क सर्जरी एवं दवाइयों के साथ मरीज एवं अभिभावक को जाने आने के लिए एक हजार राशि भी प्रदान की जावेगी । सर्जरी यूनिक हॉस्पिटल के प्रसिद्ध अस्थिरोग जोड़ प्रत्यारोपण विशेषज्ञ डॉ. प्रमोद पी. नीमा और टीम द्वारा की जावेगी ।

SWAARNIM FOUNDATION INDORE

SWAARNIM FOUNDATION

गव्यसिद्ध (पंचगव्य विशेषज्ञ)

पंचगव्य डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट

गव्यसिद्ध बनने के बाद निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्य कर सकते हैं

- खुद की प्रैक्टिस : आप प्राइवेट प्रैक्टिस खोलकर अपने खुद के चिकित्सा केंद्र का संचालन कर सकते हैं।
- आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्र : पंचगव्य थेरेपी द्वारा चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए आप आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्रों में जॉब कर सकते हैं।
- स्वास्थ्य संगठनों : आप अस्पताल, आयुर्वेदिक क्लिनिक, प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र, योग और आयुर्वेद संस्थान में नौकरी कर सकते हैं।
- फार्मेसी में पर्यवेक्षक: आप फार्मेसी में पर्यवेक्षक के रूप में काम कर सकते हैं।
- गव्यसिद्ध पंचगव्य थेरेपी प्रैक्टिशनर: गव्यसिद्ध पंचगव्य थेरेपी प्रैक्टिशनर के रूप में कार्य कर सकते हैं।
- स्वास्थ्य सलाहकार: आप स्वास्थ्य सलाहकार के रूप में काम कर सकते हैं।
- वेलनेस सेंटर प्रबंधक: आप वेलनेस सेंटर प्रबंधक के रूप में काम कर सकते हैं।

पढ़ाने का तरीका

प्रशिक्षण पूर्व रिकॉर्ड किए गए डेमो, ऑनलाइन नोट्स, असाइनमेंट के माध्यम से किया जाता है। प्रत्येक विषय में विषयों की सूची होती है। प्रत्येक विषय को पूरा करने के लिए, आपको पहले विषय को पूरा करना होता है। एक विषय को पूरा करने के लिए आपको लॉगिन करना, डेमो देखना, नोट्स पढ़ना होता है।

एडवांस डिप्लोमा इन आयुर्वेदा एंड पंचगव्य थेरेपी (ADAPT)

एडवांस डिप्लोमा इन इंटीग्रेटेड आयुर्वेदा एंड पंचगव्य थेरेपी (ADIPT)

डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी (DPT)

एडवांस डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी (ADPT)

सर्टिफिकेट इन पंचगव्य थेरेपी (CPT)

उपरोक्त कोर्स होने के पश्चात आपको बीएसएस वोकेशनल कोर्स डिप्लोमा प्रदान किया जाएगा | BSS भारत सेवक समाज, योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय विकास एजेंसी है |

एडमिशन प्रारंभ

Visit - www.swaarnimfoundation.com

Swaarnim
Naturscience Limited
फार्मेसी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

स्वर्णिम फाउंडेशन

JAIN'S
COW URINE THERAPY
क्लिनिक

165, आरएनटी मार्ग, इंदौर - 452001 | ✆/ 9301514792 / 9893052003 | समय - सुबह 10 से दोपहर 4 बजे तक

वेबसाइट- swaarnimfoundation.com, ईमेल- mail@swaarnimfoundation.com